गुरु नानक के सामाजिक विचार

ड़ॉ. रवींद्रकुमार शिरसाट
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविद्यालय,
अमरावती.

गुरु नानक मध्यकाल के भक्ति आन्दोलन के क्रांतिकारी संत थे। गुरु नानक को सिक्खों के प्रथम गुरु होने का सम्मान प्राप्त है। खत्री जाति के व्यापारियों के परिवार में पटवारी के घर में पैदा हुए। कबीरादि संतों की भांति गुरु नानक ने भी जनता को आह्वान किया कि जाति–पांति व्यर्थ है उसे त्याग दे। उन्होंने सर्वत्र यह शिक्षा प्रसारित की कि ईश्वर के नजर में सभी मनुष्य समान है। साथ ही नानक ने कर्मकांड, अनुष्ठान, व्रत, उपवास तीर्थाटन शास्त्रों का अध्ययन आदि को गौण मानते हुए प्रेम और भक्ति की आराधना को महत्त्व देते थे। गुरु नानक यह समझ चुके थे कि जाति–पांति की स्पर्धा और अंधविश्वास के चलते समाज का विकास असंभव है। अत: उन्होंने समस्त जनता की एकता पर बल दिया जो ऐतिहासिक आवश्यकता के अमुल्य था। नानक मध्ययुग के एक प्रगतिशील संत थे। अत: उन्होंने जाति–पांति के भेदभाव पर आधारित सामाजिक विभाजन जैसी बातों को निरर्थक बताया। ईश्वर के सम्मुख सभी मनुष्य के समानता का उनका सिद्धांत सामाजिक चेतना का द्योतक था। उन्होंने व्यक्ति के गुण और योग्यता पर जोर दिया जो ऊँची जाति अथवा किसी विशिष्ट वंश में जन्म लेने के फलस्वरुप प्राप्त सुविधाओं को विपरीत था।

गुरु नानक के समय में सामंतवाद का बोलबाला था, परंतु गुरु नानक के व्यक्तित्व ने जनता में नई चेतना जमायी उनमें नई स्फूर्ति पैदा की। सामंतवाद के अन्तर्गत फैले जातिवादी और धार्मिक अलगाव पर चोट करते हुए सामंतवाद विरोधी संघर्ष में नई जान फूंकी। के. दामोदरन के शब्दों में – ''सिख धर्म का उदय सामंतवादी विरोधी संघर्ष की विचारधारा के रूप में हुआ था। सत्र शताब्दी में ऐसी तीव्र हो रहे थे, सिक्ख आंदोलन ने मुगल शासन के विरूद्ध सशस्त्र संघर्षो का रूप धोरण कर लिया था। ताराचंद ने लिखा है – ''गुरु नानक में जिस धार्मिक आंदोलन का श्रीगणेश किया था, वह उनके अनुगामियों के काल मे निरंतर, भक्तिशाली होता गया। सिख धर्म को माननेवालों का दृढ नौतिक आचरण और शुद्ध सरल जीवन उसे भारत के किसी प्रकार के अन्य पंथो की तुलना में विशिष्टता प्रदान करता था। उनकी समझौता न करने की भावना से शहादत की । संभावनाएं और सुगठित गुरुद्वार के बाद के मौजूद थे। मूगल साम्राज्य के बादक काल में व्याप्त अशांतिपूर्ण राजनीतिक परिस्थितियों ने इन संभावनाओं की मूर्तरूप धारण करने का अवसर प्रदान किया। अंकुर ने अब फल रूप धारण कर लिया। बाद के गुरुओं ने अपरिहार्य रूप से जुझारू समाज का साथ दिया और बड़े ही वीरतापूर्व ढंग से किसानों के संघर्ष का नेतृत्व किया। सिक्खों ने यद्यपि अपने संगठन को बदल दिया किन्तु उनके धर्म या गुरु नानक के शिक्षाओं की अमीर छाप निरंतर बनी रही।''[१]

गुरु नानक की शिक्षा का जनता पर जबर्दस्त प्रभाव था अत: उनके नेतृत्व तत्कालीन समय के व्यापारी, कारोबार, दलित, साधारण किसका आदि सभी–उत्पीडित जन एकजुट हुई।

नानक ने सामंतों व्यवस्था के साथ ही पुरोहित, मुल्ला दोनों पर हमला बोला। उनकी कडी आलोचन करते हुए अपने शिक्खों को आहवान किया कि वे मूर्तिपूजा कर्मकांड, जात–पांत के भेदभाव और तीर्थाटन का विरोध करें। उन्होंने सामाजिक सुधार के कार्य पर जोर देते हुए इसे ही ईश्वर की सेवा बताया। नानक ने कहा– धर्म केवल शब्दों का जाल नहीं है जो व्यक्ति सब मनुष्यों को समान मानता है वही धार्मिक है संसार की बुराईयों के बीच शुद्ध रहो, तुम्हे धर्म का सच्चा मार्ग मिल जायेगा।

गुरुबचन सिंह के शब्दों में – ''गुरु नानक ने अपने युग के अन्याय और अत्याचार के संपूर्ण ताने–बाने की पूरी तरह से भर्त्सना की है। उन्होंने अत्याचार का विरोध किया वह हिंदू हो या मुसलमान। सच्चे शहंशाह तो वे लोग है, जो ईश्वर के अनुयायी है और जो सांसारिक शहंशाहों से नहीं डरते। आज हम क्रांति को जिस अर्थ में समझते हैं, उस अर्थ में गुरु नानक की शिक्षाओं को क्रांतिकारी मानता उचित नहीं होगा। किन्तु उनकी स्वताओं में क्रांति के बीज हैं, जिन्हें सत्रहवीं और अठारहवी शताब्दियों में उनके अनुयायियों के माध्यम से फलने–फूलने का अवसर मिला।''[२]

गुरु नानक के अपने युगी में प्रचलित अन्याय–अत्याचार, भ्रष्टाचार, सामान्य जनता को ठगने वाले धर्म के ठेकेदार, धार्मिक आडंबर एवं पाखंड खोखली प्रदर्शन वृत्ति का खंडन किया है। तत्कालीन राजाओं की क्रूरता और झूठे धार्मिक कर्मकांडो का कड़ा विरोध करते हुए उसकी निरर्थकता को उजागर किया है, साथ ही जनता की आँखो पर पडे अज्ञान रूपी पर्दे को हटाने की चेष्टा करते हैं।

मनु जापु दुर राजा महता कूडू होआ सिल दारू।
कामु वेबु सदि पूछी ऐ बहि–बहि करै बीचारू।।
अधी रयति गिआन बिहूणी भाहि भरै मुरदारू। (रागु आसा, वार, सलोकु : २१)

अर्थात – जिह्वा का लालच मानो राजा है, पाप वजीर और झूठ सिक्के बनानेवाला सरदार है। काम नायक, इसे बुलाकर सलाह पूछी जाती है और यह बैठे–बैठे ही विचार करता है, और प्रज्ञा अज्ञानी, होने के कारण अंधी हो गयी है, यही कारण है कि वह अग्नि रूपी ऋण को रिश्वत दे रही हैं।

नानक देव ने अपने समय के राजप्रशासन और उसकी शोषण वृत्ति का पर्दाफाश करने के साथ ही धर्म के नामपर झूठ बोलकर आम जन को लुटनेवाले, हराम की कमाई खानेवाले काजी को, जीवों को दु:ख देनेवाले नहाते फिरते स्वयं को निष्पाप एवं शुद्ध बतानेवाले ब्राह्मण और योगी को युक्ति हीन मूर्ख, अंधा या अज्ञानी कहा है–

कादी कूडू बौलि मलु खाइ। ब्राह्मण नावौ जीब धाई।
जोगी जुगति न जाणे अंधु। तीनों ओजाड़े का बंधु।।

गुरु नानक ने अपने अंदाज में अपने समय की सच्चाई को प्रकट करते हुए कहा है कि कलियुग अर्थात बुरा समय छुरी है, राजा गण कसाई है। और पता नहीं धर्म पंखों पर कहा उड़गया है।

झूठ की अमावश्या छायी हुई है और सत्य रूपी चंद्रमा दिखाई नही पड़ता कि कहा उचित हुआ है। में उस सत्यरूपी चंद्रमाको ढूँढ–ढूँढ कर धककर व्याकुल हो चुका हूँ, अज्ञानरूपी अंधकार में अब रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है –

कलि काले राजे कासाई धरमु, पंखु करि उडरिया।
कुडू अमावस सचु चंद्रमा दीसौ माही कह चडिआ।।
हरु भक्ति विकुनी होई।
आधरै राहु न कोई (रागु मांझ, तार, सलोकु ३५।।)

नमाज अदा करनेवाले धर्म के नामपर लोगों को लुटनेवाले, काजी, हाकिम को फटकारते हैं। उनकी पोल खोलते है साथ ही कहते हे कि उनके मुंशी ऐसे खत्री है, जो छुरी चलाते, हालाक उनके गले में जनेऊ और बाह्मण इन्ही खत्रियों के घर जाकर शंख बजाते हैं। इसीलिए उन ब्राह्मणों को भी उन्हीं पदार्थो का स्वाद आता है। नानक आगे कहते हैं कि यहां झूठ की पूंजी है और झूठ ही व्यापार है। झूठ बोलकर गुजारा करते हैं। शर्म और धर्म कहीं दिखाई नहीं देता। नानक देव का कहना है कि सभी स्थानों में झूठ ही व्याप्त हो गया है –

माणस खाणो करहि निवाज। धूरी वगाइनि तिन गलि ताग।
तिन धरि ब्राह्मण पूरहिनाद। उना भी आबहि कोई साद।।
कूड़ी रासि कूडा बापारू। कुडू बेली करहि आहारू।
सरभ धरम का डेरा दूरी। नानन कूडू रहिआ भरपूरि।।
अर्थ टिका तेडि धोती करवाई। छुरि जगत कसाई। (रागु आसा, बार, सलोकु: ३४)

संत नानक धर्म कर्म के नामपर आड़ंबर एवं पाखंड करनेवाले लोगों की कठोर निंदा करते हैं। दूसरों को ढगकर लुटकर अपने पितरों की आत्मशांति करने की चेष्टा करता है तो नानक ऐसे लोगों को झूठा और चोर कहते हैं। नानक कहते हैं कि ऐसा दान–पुण्य परलोक में स्वीकार नहीं होगा। वहा चोरी की वस्तुएं पहचान ली जायेगी और पितर लोग चोर प्रमाणित होंगे। परमेश्वर वहां पर यह न्याय करेगा कि दलाल अर्थात ब्राह्मण का हाथ काट लिया जाये। नानक की काव्य पंक्तियां देखिए–

जो मोहा का धरू मुहै थरु मुहि पितरी देई।
आगौ बसतु सिजाणीऐ तिपरी चोर करेई।
बढि– कहि हथ दलाल के मुसफी एह करेई।।
नानक अगौ सौ मिलौ जिखरे धाल देद (राग, आसा, वार स लोकु : ३६)

जाति हमारे भारतीय समाज के लिए किसी – कलंक या बिमारी से कम नहीं है। इस जाति को मानसिकता ने समाज को खंडित कर दिया है। जाति के कारण ब्राह्मण सवर्ण आदि अपने को श्रेष्ठ बताते हैं और दलितों को नीच कहते हैं। उनके प्रति घृणा छुआछूत और घृणा की भावना रखते हैं। भारतीय समाज में केवल सामान्य मनुष्य ही जाति की आग में नही जलता रहा बल्कि शूद्र जाति में जन्मे महान संत, महंत, विद्वानों को भी जाति के नाम पर सताया गया। उन्हें मंदिर में प्रवेश नहीं दिया उल्टा उन्हें मार–पिटकर मंदिर से बाहर खदेड दिया।

मध्यकालीन संतो ने सवर्ण, ब्राह्मणों की इस कपट–नीति का विरोध किया। नानक ने भी जाति प्रथा या छुआछूत जैसी बुराई की निंदा की। गुरबचन सिंह तालिक के शब्दों में –''जाति भेद, खास तौर से छुआछूत जैसी बुराई के संदर्भ में गुरू नानक ने मानवता की एकता पर बल देते हुए आधुनिक युग का

उद्घोष किया है। उन्होंने उन लोगों के दंभ का खंडन किया है जो स्वयं का ऊँची जाति का मानते हैं। निर्धनों के प्रति मानवीयता की उच्च शवना से ओतप्रोत होकर उन्होंने निम्न जाति के उपेक्षितों के साथ अपना ऐक्य स्थापित किया है।''[३]

नानकजी ने जातिभेद को व्यर्थ और बेकार की बातें बताई हैं। जाति का अहंकार उन्हें मंजूर नहीं था। इसीलिए उन्होंने नीच कहे जानेवालों का साथ कभी नही छोडा। नानक के मतानुसार जो लोग नीच कहे जानेवालों के साथ होते हैं, जहा शूद्रो पढ दयादृष्टि होती है, वही पर परमेश्वर की कृपादृष्टि होती है। नानक का यह भी मानना था कि जाति का दंभ अच्छी बात नहीं क्योंकि सभी जीवों में एक ही प्रतिबिंब है, अर्थात सारे घटों मं एक ही परमात्मा विद्यमान है। अत: सभी की परमात्मा को ज्योति समझना चाहिए। किसी की जाति नहीं पूछनी चाहिए, क्योंकि लोक और परलोक में कोई जाति है ही नहीं।

नानकजी का मानना था कि जब तक मनुष्य से विशेष कर दलित या नीच कहे जानेवाले मनुष्य से प्रेम किये बिना ईश्वर से प्रेम नहीं हो सकता। ईश्वर की कृपादृष्टि उन्हीं पर होती है जो दबे, कुचलों की सहायता करते हो। जाति–पाति सब व्यर्थ है। कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है, जिसमें कुछ योग्यता न हो। नानक के काव्य की पंक्तियां देखिए–

१. नीचा अंदरी नीच जाति नीची हूँ अति नीचु।
नननकु तिनकै संगि साथि बडिआ सिड किया रीस।।
जिथौ नीच समालीअनि तिथौ वदरी तेरी बखसीस। (सिरि राग : ३)

२. जानहु जोति व पूछहु जाति आगे जाति है।। रहाड (रागु आसा : ३)

३. फकड जाति फकडे नाउ। सभना जीभा इका छाड।। (सिरि राग, वार : ३)

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों में –''गुरु नानक देव की वाणी में एक अद्भुत प्रेरणादायी शक्ति, किसी भी अन्य मध्ययुगीन संत की वाणी में नहीं है। जिन वाणियों से मनुष्य के अंदर इतना बडा अपयजय आत्मबल और कभी समाप्त न होनेवाला साहस मिल सकता है, उसकी महिला नि:संदेह अतुलनीय है।''[४]

भारतीय समाज व्यवस्था मं शुद्रो को जितना नीच समझा गया। उनपर जितने अत्याचार सवर्णो में किये। उन्हें हाशिए पर रखा गया। अपने स्वार्थ के लिए गुलाम बना कर रखा ठीक वैसे ही सदियों से नारी को अपमानित, प्रताडित किया गया। नारी को मात्र भोग का साधन मानकर उसे मायावी, पाप की योनी, मुर्ख, भावुक अपवित्र बताया। उसे चरित्रहीन माना गया। मानवता का आधा हिस्सा नारी है औ उसे ही शिक्षा, सम्मान और अधिकारों से वंचित रखा गया। यहां तक कि मध्यकालीन कई संतों ने, भक्तों ने भी नारी को दोषी मानकर उसकी निंदा की परंतु नानक स्त्री को सम्मान जनक व्यवहार की अधिकारीनी बताते हुए उसे पवित्र बताया। उनके मतानुसार अपवित्र मन से जुड़ी बात है। यह मानना कि शिशु को जन्म देने के बाद ४० दिनों तक घर अपवित्र रहता है, इस बात को नानक झुठलाते हुए सूतक से जुडी बातों को अंधविश्वास मानते थे। इससे पता चलता है कि नानक अपने समय से कितने आगे थे। उनके विचार कितने उदात्त थे। नानक के शब्दों में–

''इदआ कपाह संतोखु सूतु, जतु गंठी सतु वट।

एहु जनेऊ जोअ का हई त पाडे धतु।।
ना एहु लुटै न मलु लगौ न एहु जले न जाइ।
धनु सु माणस मानका जो गलि चले पाई।।(रागु आसा, सलोकु : २९)

नानक जी अपने समय के सजग संत थे। और अपनी वाणी के माध्यम से सामाजिक जागरण का कार्य कर रहे थे। अच्छी तरह जानते थे कि तीर्थो पर नहाने से पाप धूल जाते हैं। इस तरह की धारणा को व्यर्थ मानते हैं। उनके मतानुसार व्यक्ति तब तक पवित्र नहीं होता जब तक उसके मन का मैल न धूल जाए। बाहर से तन को जितना धो लो कोई फर्क नहीं पडनेवाला। जिनके मन में खोट है, जो चोर है उनके तन का मैल तो साफ होता है, परन्तु मन का मैल अर्थात अहंकार और पाखंड अधिक बढ़ता जाता है। कडवी तुमडी (लौकी) को बाहर से चाहे जितना धो लिया जाए वह भीतर से कड़वी ही रहती है। साधु संत बिना नहाए भी सज्जन ही रहते हैं, लेकिन जो चोर होते हैं वे नहाकर भी चोर ही बने रहते हैं। नानक की काव्य पंक्तियाँ देखिए

नावन चले तीरथी मनि खोटे तनि चोवू।
इकु भाऊ लथी नातिआ दूर भा चडी असी होर।।
बाहरी धोती तुमडी अंदरि बिसु निकोर
साथ भले अननातिआ चोर सि चोरा – चोर।। (रागु सूही, वार,सकोकुप)

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि, संत नानक के सामाजिक विचार क्रांतिकारी है। उनमें सामाजिक परिवर्तन की है। सामाजिक, धार्मिक आडंबर एवं अंधविश्वास की नानक देव ने आलोचना करते हुए उँच–नीच की श्रेणियों को कृत्रिम एवं मानव निर्मित बताया। तत्कालीन राजाओं एवं ब्राह्मणों द्वारा होनेवाले सामाजिक उत्पीडन एवं आर्थिक शोषण के सत्य को उजागर करते हुए नारी की महत्ता का उसके त्याग और कर्मठता का परिचय देते हुए उसे पुरुष के बराबर स्थान दिया। नानक की कविता या पर्दो को विभिन्न राग–रागिनियों के साथ गाया जाता रहा है। इनके सभी पद या रचनाएं नि:संदेह भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उनकी कविता के रूप में, निर्दोष समाज के आग्रही के रूप में मध्यकालीन भारत के महान संत के रूप में शिख पंथ के प्रवर्तक के रूप में, आध्यात्मिक गुरू के रूप में उनका सदैव स्मरण होता रहेगा।

संदर्भ संकेत

१) के. दामोदरन, भारतीय चिंतन परंपरा, पृ. ३३६
२) गुरुबचन सिंह, भारतीय साहित्य के निर्माता : गुरु नानक, पृ. ५४
३) वही, पृ. ५८
४) महावीर प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ से उध्दृत, पृ. १६१